!! माटी का घर !!

एक एक टोकरी माटी को जोडकर
खडा था एक घर !
जला करता था,नन्हा सा दीया जहां डयोढी पर !
जिसे सब पहचानते थे
छोटा बडा अमीर गरीब भी !
मां की तपस्या और, त्याग के बलबूते खडा था यह घर !
घर के सकून में शामिल था
बाप का पुरूपार्थ और, रिश्ते का सोधापन भी !
दुनिया की चकाचौध से दूर
पहुचा जा सकता था जहां
कच्ची सडको या पगडण्डियों से होकर !
जहां उगता हैं सूरज पहले आज भी !
उतरा करती थी,
खुशी के झोके की हवा !
तंगी में भी जहां होता था मां का हाथ दवा !
मां की तपस्या और ,
बाप के पुरूपार्थ से खडे घर पर !
कागा दृप्टि पड गयी,
टुकडे टुकडे हो गया
माटी के ढेलें पर भी कब्जा हो गया!
रिश्ते के ही लोगो ने आतंक मचा दिया !
रोटी रोजी को तलाशता मै भी,
पहुंच गया गावं से दूर बहुत दूर
ईंट पत्थरों के शहर में !
एक आशियना मैने भी खडा कर लिय !
अपनी साठ साल तक की उम्र को बेचकर !
आसपास जहां लोग तो बसते हैं,
पर जिन्दा लाश होकर !
बेचैन हो जाता हूं रह रह कर !
ढूढता हूं,
मानवीय रिश्तो की सुगन्ध और,
अपनेपन का एहसास भी !
नही मिलता हैं कहीं
माटी के घर सी छांव
नही सोधेपन का भाव पुराने गांव सा!
ईंट पत्थरों के शहर में
कैद हो गया हूं जैसे,बडी बडी इमारतो से घिरे
परिश्रम के ईंट ,पसीने के गारे की नींव पर टीके अपने ही घर में !!

नन्दलाल भारती